Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-292-294

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 292-294
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com
Author's :

अभय सुकुट डुँगडुँग

सहायक प्राध्यापक, संत जेवियर महाविद्यालय, महुआडॉड़.

Corresponding Author :

अभय सुकुट डुँगडुँग

सहायक प्राध्यापक, संत जेवियर महाविद्यालय, महुआडॉड़.

भाषा-संपर्क के कारण शब्दार्थ और बहुअर्थकता में परिवर्तन

संसार की सृष्टि ईश्वर ने की है। इसी सृष्टि में एक जीव मानव जाति है, जो समस्त जीवो में श्रेष्ठ है। श्रेष्ठता का कारण उसकी भाषा है। भाषा ईश्वर प्रदत्त दिव्य शक्ति है। इसी दिव्य शक्ति से वह अपने भावों, विचारों को एक दूसरे से ज्ञान इंद्रियों के माध्यम से आदान-प्रदान करता है। "भारत के कुछ धर्मानुयायी वैदिक भाषा को मूल भाषा मानते है। उनके अनुसार देवता उसी भाषा में बोलते हैं और संसार की अन्य भाषाएं उसी से निकली हैं।"[1] मुसलसानों के अनुसार – "ईश्वर ने पैगंबर को अरबी भाषा ही सबसे पहले सिखाई।"[2] ईसाइयों का विश्वास है कि भाषा की उत्पत्ति ईश्वर रचित आदम और हव्वा नामक आदिपुरुषों से हुई है। इन्होंने आदमवाटिका में प्रथम बार भाषा द्वारा संपर्क-संप्रेषण स्थापित किया। यहीं से निर्बाध अनादि काल से भाषा संप्रेषण का प्रचलन प्रारंभ हुआ और भाषा की उत्पत्ति हुई। "मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेत का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं।"[3] कालांतर में बाबुल की मीनार वाली घटना ने विभिन्न भाषाओं को जन्म दिया। इस घटना से पूर्व मानव जाति एक ही भाषा बोलते थे। एक बार वे एक ऊंची मीनार बनाने का निश्चय किये जो उन्हें स्वर्ग तक पहुंच सके। ईश्वर को यह अहंकार और दुष्प्रयास पसंद नहीं आया। उसने उनके जीभ पलट दिए, जिससे वे अलग-अलग तरह के ध्वनि शब्द निकालने लगे। फलत: उलटी-सीधी असमझ भाषा व्यवहार के कारण निर्माण कार्य रुक गया और संभवतः यहीं से अलग-अलग भाषाओं का जन्म हुआ। "पानी का स्वाद हर चौथे कोस पर कुछ न कुछ बदल जाता है और भाषा आठवें पर कुछ न कुछ परिवर्तित हो जाती है।"[4] भाषा गणक विद्वानों ने संसार की भाषाओं और बोलियों की संख्या लगभग 2796 बतायी है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। भाषा मानव समाज के संचार का मूल साधन है। इसलिए सामान्य बातचीत के क्रम में बोलता और सुनता है

तथा भाव एवं विचारों को ग्रहण करता है। अतः "भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं।"[5] भाषा अर्थात् केवल और केवल बोल सकने वाले मनुष्यों का ही मुख निस्सृत ध्वनि व्यवहार व्यवस्था है, न गुंगों की बोली और न पशु-पक्षियों की आवाज।

जब दो या दो से अधिक व्यक्ति एक दूसरे के संपर्क में आते हैं तथा उनके बीच ध्वनि, शब्द और अर्थ का आदान-प्रदान होता है। इस प्रक्रिया को संपर्क भाषा कहते हैं। संपर्क के कारण शब्दों के अर्थ में विस्तार, संकुचन तथा परिवर्तन देखने को मिलता है। परिवर्तन सृष्टि का विधान है। परिवर्तन को ही विकास समझा जाता है। इस प्रक्रिया में भाषा भी अछूता नहीं रहा है। "ध्वनि का उत्पादन वाक्-इन्द्रिय से होता है, उसके संवहन के लिए वायु-तरंगे कार्य करती है और ग्रहण करने की क्रिया कर्ण-कुहर द्वारा होती है।"[6] मानव कंठ में अनगिनत ध्वनि उत्पन्न करने की क्षमता है। अनेक ध्वनियों के मेल से शब्द की उत्पत्ति होती है। अंत: भाषा का परिवर्तन बालक के अंगों से होता है जैसे बालक का शारीरिक वैशिष्ट्य,अनुकरण क्षमता, उच्चारण प्रक्रिया, मानसिक स्तर, अर्थबोध आदि से परिवर्तन अवश्य ही हो जाता है। जैसे -

कर्म > कम्म > काम,
चक्र > चक्क > चाक,
अश्रु > अस्सु > आँसू।

मानव ज्ञान इन्द्रियों को शब्द की सहायता से वस्तुबोध होता है। वस्तु बोधक प्रतीति ही अर्थ है। "अर्थ शब्द की ऐसी अंतरिक शक्ति होती है जो शब्द के उच्चारण करते ही उसे वस्तु की प्रतीति कराया करती है, जिसके संदर्भ या प्रकरण में कोई शब्द बोला या लिखा जाता है।"[7] शब्द और अर्थ में घनिष्ठ संबंध होता है। "शब्द प्रकाशक है अर्थ प्रकाश्य है और शब्द कारण है अर्थ कार्य है।"[8] शब्द दो प्रकार के होते हैं -एकार्थक और बहुअर्थक। एकार्थी शब्द- नदी, पेड़ एवं बहुअर्थी शब्द - 'कर' शब्द का- किरण, हाथ, मालगुजारी आदि।

"किसी जाति, राष्ट्र या जन-समुदाय के प्रति जब जैसी भावना होती है उसकी छाया उसके शब्दों के अर्थ पर पड़ती है।"[9] ऐसी स्थिति-परिस्थिति में शब्द का परिवर्तन होना तय है। पूर्व में 'असुर' का अर्थ 'देवता' था। असुर शब्द में ईरानियों के साथ संपर्क के बाद नकारात्मक मनोभावना जुड़ गई और बाद में 'राक्षस' हो गया क्योंकि 'अहुर' (असुर') (अहुरमज्दा') ईरानियों के श्रेष्ठ देवता थे। फारसी का 'मूर्ग' शब्द सभी पक्षी वर्ग से है किन्तु हिन्दी के संपर्क में आकर एक विशेष पक्षी जो प्रतिदिन सुबह होते ही कुकडू-कूं बोलकर बाँग देता है, जिसे 'मूर्गा' कहते है।

"अनेकार्थता से तात्पर्य उन शब्दों से है जो भिन्न संदर्भ में प्रयुक्त होकर एक से अधिक अर्थ एवं अर्थ छायाओं को प्रकाशित करते हैं।"[10] अनेकार्थता को बहुअर्थकता, नानाअर्थकता, बहुव्यंजनअर्थ आदि नामों से भी जाना जाता है। "कभी कोई शब्द नवीन अर्थ धारण कर लेता है किंतु प्राचीन अर्थ को भी नहीं छोड़ता, अतः दो-तीन अर्थ साथ चलते हैं।"[11] अर्थ परिवर्तन की प्रक्रिया संदर्भ के आधार पर होता है कभी सीमित अर्थ में, कभी विस्तृत अर्थ में, कभी स्थूल में और कभी सूक्ष्म में। जैसे 'जड़' शब्द का 'पेड़ की जड़', 'रोग की जड़', 'झगड़े की जड़'। 'योग' शब्द भी दर्शन, गणित, व्यायाम आदि में भिन्न-भिन्न अर्थ रखता है। भाषा में बहुअर्थक कई कारणों से विकसित होती है लक्षण से, सादृश्य से, व्याकरणिक प्रक्रिया से, बहुस्रोता से, सहिंता से इत्यादि। प्रकरण द्वारा बहुअर्थक शब्द का अर्थ निर्णय लिया या जा सकता है, जैसे मधु के कई अर्थ है- शहद, मदिरा, पुष्परस, बसंत, सोमरस, दूध इत्यादि। द्रविड़ परिवार का एक शब्द 'पिल्ला' जो किशोर बालक का समानार्थी है लेकिन भारोपीय भाषा के संपर्क में आने से इसका अर्थ कुत्ते के बच्चों के लिए प्रयोग होने लगा। 'उष्ट्र' का अर्थ 'भैंस' से है किंतु बाद में ऊंट के लिए होने लगा। ऐसा इसलिए आरंभ में आर्य शीत निवासी थे, वहां ऊंट नहीं थे, परंतु उष्ण भूभाग पर जीविका-उपार्जन हेतु आने से उनका नया उपयोगी जंतु मिला। जिसे पूर्व परिचित अर्थ में भैंसा का पर्याय समझ उष्ट्र के रूप करने लगे।

भाषा का निर्माण व्यक्ति एवं समाज करता है। भाषा में परिवर्तन सबसे पहले व्यक्ति से प्रारंभ होता है। "समाज भेद से एक ही शब्द के अर्थ में भेद आ जाता है और एक ही वस्तु के लिए भिन्न-भिन्न शब्दों का प्रयोग होने लगता है।"[12] 'भाई' कहने से बड़ा भाई का बोध होता है किंतु साला बड़े बहनोई को 'भाई साहब' कहता और बहनोई भी साले को 'भाई, तुम क्या करते हो' और कभी-कभी पत्नी को भी 'भाई, चाय नहीं दोगी'? जैसे शब्दों का व्यवहार होता है।

अतः स्पष्ट है कि शब्द चाहे एकार्थक हो या बहुर्थक किंतु ठीक-ठीक अर्थ का निर्णय लेने से भाषा का सही उपयोग होता है। शब्दों का सटीक अर्थ के अभाव और कम अनुभव से भाषा का ठीक-ठीक उचित प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

संदर्भ :

1. डॉ. श्याम सुंदर दास, भाषा विज्ञान, प्रकाशक-प्रकाशक संस्थान 4268-B/3, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-110002, पृष्ठ – 36.
2. डॉ. श्याम सुंदर दास, भाषा विज्ञान, प्रकाशक-प्रकाशक संस्थान 4268-B/3, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-110002, पृष्ठ – 36.
3. डॉ. श्याम सुंदर दास, भाषा विज्ञान, प्रकाशक-प्रकाशक संस्थान 4268-B/3, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-110002, पृष्ठ – 29.
4. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान,प्रकाशक- किताब महल 22 सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, पृष्ठ – 93.
5. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान,प्रकाशक- किताब महल 22 सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, पृष्ठ – 2.
6. डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना एवं डॉ. उदय प्रताप सिंह भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा, मीनाक्षी प्रकाशन-बेगम ब्रिज, मेरठ, पृष्ठ – 149.
7. डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना एवं डॉ. उदय प्रताप सिंह भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा, मीनाक्षी प्रकाशन-बेगम ब्रिज, मेरठ, पृष्ठ – 285.
8. डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना एवं डॉ. उदय प्रताप सिंह भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा, मीनाक्षी प्रकाशन-बेगम ब्रिज, मेरठ, पृष्ठ -286.
9. डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान,प्रकाशक- किताब महल 22 सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, पृष्ठ -275.
10. डॉ. राम छबीला त्रिपाठी, भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा, प्रकाशक- किताब महल 22 सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, पृष्ठ -128.
11. डॉ. राम छबीला त्रिपाठी, भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा, प्रकाशक- किताब महल 22 सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, पृष्ठ -135.
12. आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा एवं दीप्ति शर्मा, भाषा विज्ञान की भूमिका, प्रकाशक - राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -110002, पृष्ठ -279.

•